अल्कोहल एवं प्रोहिबिशन पर एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष-14, अंक-11, जुलाई 2024

आबकारी टाइम्स

केवल सदस्यों हेतु

महाराष्ट्र

एआई से होगी
पब और बार की निगरानी

छत्तीसगढ़

राज्य में शराब
हुई महंगी

हरियाणा

बार और पब नीति
पूरे राज्य में हो एक समान

एथेनॉल के लिए बढ़ रही है मक्के की मांग

उत्तर प्रदेश

पहली तिमाही से प्रदेश
को मिला 77 प्रतिशत राजस्व

क्लबों और बार की हो चेकिंग,
न हो ओवर रेटिंग

उपभोक्ताओं को पसंद
आ रही है प्रीमियम मदिरा

यूपीडीए इंटरनेशनल समिट - 3.0

एथेनॉल के लिए बढ़ रही है मक्के की मांग

मक्का तीसरा सबसे अधिक उगाया जाने वाला अनाज है। यह अनाज सिर्फ इंसानों के खाने के काम में नहीं आता है बल्कि यह पोल्ट्री इंडस्ट्री की जान रही है। परंतु पिछले कुछ सालों में मक्का एनर्जी क्रॉप की तरह तेजी से उभर रहा है। पेट्रोल एथेनॉल मिश्रण योजना (ईबीपी) के तहत भारी मात्रा में एथेनॉल उत्पादन की आवश्यकता है। एथेनॉल उत्पादन के लिए कच्चे माल के रूप में एथेनॉल का महत्व बढ़ गया है।

भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान (आईआईएमआर) के निदेशक डॉ. हनुमान सहाय जाट ने यूपीडीए की इंटरनेशनल समिट 3.0 में बताया कि एथेनॉल की बढ़ती आवश्यकता को देखते हुए मक्का की अधिक उत्पादन की जरूरत है। उन्होंने बताया कि भारत सरकार की एथेनॉल मिश्रण लक्ष्य को पाने के लिए आईआईएमआर 15 राज्यों के 75 जिलों के 15 जल ग्रहण क्षेत्रों में उन्नत बीज किस्मों के साथ इसका प्रसार कर रहा है। भारत सरकार ने ''एथेनॉल उद्योगों के जल ग्रहण क्षेत्र में मक्का उत्पादन में वृद्धि'' नाम से एक प्रोजेक्ट शुरू किया है जिसे आईसीएआर के अधीन आईआईएमआर संचालित कर रही है।

यूएस एथेनॉल योजना में सहयोग को है तैयार

भारत में एथेनॉल उत्पादन की काफी संभावना है। भारत में इसके लिए पर्याप्त संसाधन भी उपलब्ध है। यूपीडीए भारत में एथेनॉल उत्पादन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यूएस ग्रेन काउंसिल के साउथ एशिया डायरेक्टर रीस एच कैनेडी ने नई दिल्ली के होटल हयात सेंट्रिक में 19 जुलाई को आयोजित यूपीडीए इंटरनेशनल समिट 3.0 में कहा कि हम भारत में एथेनॉल की उपलब्धता बढ़ाने के लिए सभी प्रकार के सहयोग करने को तैयार हैं। हम अपने सामर्थ्य के मुताबिक यहां के किसानों के लिए यूपीडीए के साथ अपनी तकनीकी और विशेषज्ञता उपलब्ध करायेंगे। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि अमेरिका भारत में एथेनॉल एक्सपोर्ट करने को भी तैयार है।

किसान से प्लांट तक बनेगा ईको सिस्टम

एस.के. शुक्ला

भारत सरकार के एथेनॉल मिश्रण लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अल्कोहल उत्पादन इकाईयां कई तरह के प्रयास कर रही हैं। वर्ष 2025-26 तक एथेनॉल मिश्रण के 20 प्रतिशत लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तथ्य रॉ मैटेरियल्स है। यूपीडीए अपने स्तर पर भारत सरकार के इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक रोडमैप बनाकर उस पर काम कर रहा है। यूपीडीए के प्रेसीडेंट एस.के. शुक्ला ने नई दिल्ली में आयोजित यूपीडीए इंटरनेशल समिट में 19 जुलाई को कहा कि मक्का एथेनॉल के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इससे किसानों को भी रोजगार और आमदनी में ईजाफा होगा।

उन्होंने बताया कि यूपीडीए यह प्रयास कर रहा है कि इसकी खेती जीरो मैन पावर पर आधारित हो। इसके लिए एक ईको सिस्टम तैयार करने में यूपीडीए अपनी पूरी कोशिश कर रही है। ईको सिस्टम के अंतर्गत मशीनीकरण किया जायेगा जिसमें न्यूमैटिक प्लांटर, ड्रोन, हार्वेस्टिंग मशीन तथा लॉजिस्टिक सिस्टम का उपयोग किया जायेगा। किसान के खेत से पैदा होने वाला मक्का सीधे प्लांट तक ले जाने की व्यवस्था बनाई जायेगी। यह ईकोसिस्टम तीन-चार वर्ष में यूपी में तैयार हो सकता है।

उन्होंने बताया कि उनकी कंपनी आईजीएल गोरखपुर ने यूपी के संतकबीरनगर जनपद में किसानों के साथ मिलकर मक्के की खेती कराई थी। इसमें किसानों की लागत 50 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर आई थी और उन्हें 60 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर का लाभ हुआ था। उन्होंने बताया कि मक्के का उत्पादन तीन से चार गुना बढ़ाया जा सकता है और इसकी लागत भी मशीनीकरण द्वारा कम की जा सकती है।

नालेज सेशन में उभरकर आये नये शोध और विकास की तकनीकी

यूपीडीए के तकनीकी सेमीनार में देश और दुनिया के 300 से अधिक लोगों ने भाग लिया और इस क्षेत्र के विशेषज्ञों ने अल्कोहल क्षेत्र में विकास और सुधार पर अपने-अपने विचारों को साझा किया। इस क्रम में यूएस ग्रेन के रीस एच कैनेडी, रीग्रीन एक्सेल के स्वप्निल शर्मा, नेचुरल रिसोर्स बायोकेम के प्रभाकर ए त्यागी, लेलेमंड बायोफ्यूल के राजेश मोहन, इंटरनेशल फ्लेवर्स एंड फ्रेगरेंस की सुश्री रीतु भल्ला और नोवाजाइम्स के डॉ. विजय अडपा ने पहले नालेज सेशन में अपने विचार और सुझाव रखे।

नालेज सेशन के दूसरे सत्र में कैटालिस्ट के डॉ. केवीटीएस पवन कुमार, स्प्रे इंजीनियरिंग के सुखराज सोनी, बेयर क्राप साइंस के संजीव शर्मा, एसएसपी प्रा.लि. के आकाश गुंडावर, रिलायंस इंडस्ट्रीज के भारत बी मेहता तथा कार्टेवा एग्री साइंस के डॉ. आशीष श्रीवास्तव ने अपने सुझाव दिये। नालेज सेशन के तीसरे सत्र में राज प्रासेस के वीनू पानिकर, आयोन एक्सचेंज के अजय पोपट, रोकेम सेपरेशन के निखिल घराट तथा अवंत गार्डे के जी श्रीनाथ ने अपने सुझाव और इस क्षेत्र में हुए विकास पर जानकारियां उपलब्ध कराई।

यूपीडीए स्टेट बॉडी होते हुए बनी इंटरनेशनल निकाय

रजनीश अग्रवाल

उत्तर प्रदेश डिस्टिलर्स एसोसिएशन (यूपीडीए) अल्कोहल उत्पादन क्षेत्र में यूपी के उत्पादन इकाईयों का नेतृत्व करती है। यूपीडीए लगातार प्रदेश के अल्कोहल उत्पादन के विकास के लिए कोशिश करती है। इसी क्रम में यूपीडीए ने तीसरा इंटरनेशल समिट नई दिल्ली में 19 जुलाई को आयोजित की थी। यूपीडीए के इस बार की समिट का मुख्य मुद्दा मक्के की खेती के विस्तार और एथेनॉल लक्ष्य प्राप्त करने पर आधारित था। यूपीडीए के सेक्रेटरी जनरल रजनीश अग्रवाल ने बताया कि प्रति वर्ष सेमीनार आयोजित कर अल्कोहल उद्योग को एक नया आयाम देने का प्रयास किया जता है।

यूपीडीए स्टेट बॉडी होते हुए नेशनल बॉडी से ऊपर होकर अब इंटरनेशनल संस्था बन गई है। उन्होंने कहा कि हमें गर्व है यूएस, फ्रांस तथा ब्राजील आदि देश सीधे यूपीडीए से जुड़े हुए हैं। देश के बाहर ही नहीं देश के अन्दर कई संगठनों के साथ मिलकर यूपीडीए अल्कोहल उत्पादन के क्षेत्र में नये-नये विकास कार्य कर रही है। यूपीडीए उत्तर प्रदेश में सरकार को राजस्व संकलन और उसमें वृद्धि के लिए सहयोग और सुझाव प्रस्तुत करती रहती है। राष्ट्रीय स्तर के ईबीपी योजना में भी यूपीडीए अपना पूरा जोर लगा दिया है।

मक्के को बढ़ावा, लेकिन कास्टिंग में हो सुधार

मनीष अग्रवाल

यूपीडीए अल्कोहल उत्पादन की बढ़ोत्तरी के लिए सभी स्तर पर प्रयास कर रही है। अल्कोहल उत्पादन में वृद्धि के लिए नेशनल और इंटरनेशनल स्तर पर विभिन्न संगठनों के साथ यूपीडीए ने समझौता किया है। यूपीडीए के वाइस प्रेसीडेंट मनीष अग्रवाल ने बताया कि भारत सरकार की एथेनॉल ब्लेंडिंग लक्ष्य को पूरा करने के लिए फीड के रूप में मक्के की अधिक आवश्यकता होगी। मक्के के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि के लिए एसोसिएशन स्तर पर और निजी स्तर पर अल्कोहल उत्पादक प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि हमारी कपंनी सुपीरियर ने भी अपने आस पास के किसानों के साथ मिलकर मक्के की खेती को बढ़ावा देने का काम कर रही है और उन्हें बीज आदि के रूप में सहयोग भी कर रही है। किसानों के अतिरिक्त अपने फैक्ट्री के परिसर में हम मक्के की खेती कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि सरकार को मक्के की उपयोगिता को बढ़ाने के साथ ही इसकी कास्टिंग पर भी ध्यान देना होगा। चावल से एक टन में 480 लीटर और मक्के से एक टन में 380 लीटर लगभग एल्कोहल प्राप्त होता है। इसी तरह मक्के की डीडीजीएस (डिस्टिलर्स ड्राईड ग्रेन्स विथ सोल्यूबल) की कीमत मार्केट में लगभग 10-11 रुपये है जबकि चावल की डीडीजीएस लगभग 18-20 रुपये किलो मिल जाता है। सरकार को मक्के से बने एथेनॉल की कीमत पर विचार करना होगा।